अभिनव मीमांसा

जुलाई-सितम्बर, 2023

संपादक-डॉ. विवेक पाण्डेय

पोन्नियिन सेलवन–महान चोल नायकों का स्मरण कराती एक गाथा

पवन कुमार

हाल ही में तमिल फिल्म पोन्नियिन सेलवन के हिन्दी में रिलीज होने के बाद आम जनमानस में और विशेषकर हिन्दी सिने प्रेमियों में यह उत्कंठा जागृत हुई है कि इस ऐतिहासिक फिल्म की पृष्ठभूमि क्या है? उत्तर भारत के दर्शकों को इस फिल्म ने काफी हद तक आकर्षित किया। हालांकि उत्तर भारत के दर्शकों के लिए दक्षिण भारतीय राजनीतिक इतिहास को समझना कभी आसान नहीं रहा, हिन्दी बेल्ट के दर्शकों द्वारा इस फिल्म की सराहना किये जाने के बावजूद उनमें इस फिल्म की पृष्ठभूमि के विषय में कौतूहल बना रहा। फिल्मकार मणिरत्नम् द्वारा इस फिल्म को बनाने में कोई कमी नहीं की गई है। कलाकारों के चयन, पटकथा लेखन, गीत-संगीत और सिनेमेटोग्राफी की दृष्टि से यह फिल्म निश्चित ही उच्च स्तरीय है।

पोन्नियिन सेलवन फिल्म दरअसल महान तमिल लेखक कल्कि कृष्णमूर्ति द्वारा तमिल भाषा में लिखे गये ऐतिहासिक उपन्यास का फिल्मी रूपांतरण है। यह उपन्यास तमिल लेखक कल्कि कृष्णमूर्ति द्वारा दरअसल एक धारावाहिक के रूप में एक तमिल पत्रिका साप्ताहिक में पहली बार 29 अक्टूबर, 1950 को प्रकाशित किया गया था। यह उपन्यास पहले अंक से ही पाठकों में लोकप्रिय हो गया। इस धारावाहिक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यह धारावाहिक लगातार 16 मई, 1954 तक प्रकाशित किया जाता रहा। पोन्नियिन सेलवन को तमिल साहित्य के महानतम् उपन्यासों में से एक माना जाता है। इसकी लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि कल्कि साप्ताहिक का प्रसार इस धारावाहिक के प्रकाशन के दौरान पत्रिका का प्रसार 71 हजार प्रतियों से भी ज्यादा हो गया था।

1955 में इस धारावाहिक उपन्यास को एकीकृत करते हुये पांच खण्डों में प्रकाशित किया गया। एकीकृत रूप में यह उपन्यास दो हजार से भी ज्यादा पृष्ठों में संकलित हुआ है। यह उपन्यास चोल राजकुमार अरुलमोझिवर्मन के आरम्भिक दिनों के विषय में अत्यंत दिलचस्प तरीके से कथानक प्रस्तुत करता है। दक्षिण भारतीय राजवंशों के इतिहास को समेटे यह उपन्यास तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के साथ-साथ सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश को प्रस्तुत करता है। हम जानते हैं कि दक्षिण भारतीय राजा अपनी नौसेना के माध्यम से कई अन्य देशों तक अभियान पर जाते थे। इन घटनाओं का जीवंत विवरण इस उपन्यास में किया गया है। लेखक ने अपने उपन्यास को और भी प्रामाणिक बनाने के उद्देश्य से तीन बार श्रीलंका का दौरा भी किया।

इस कृति को लिखने वाले रामास्वामी कृष्णमूर्ति का जन्म 9 सितंबर 1899 को भारत के तमिलनाडु के मइलादुथुराई जिले के मनालमेडु के पास पुथमंगलम में हुआ था। कृष्णमूर्ति के पिता रामास्वामी अय्यर तत्कालीन मद्रास प्रेसीडेंसी के पुराने तंजौर जिले के पुट्टमंगलम गाँव में एक एकाउंटेंट थे। रामास्वामी ने अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने गाँव के स्कूल में शुरू की और बाद में मायावरम में म्युनिसिपल हाई स्कूल में शिक्षा ग्रहण की। असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होते हुये रामास्वामी ने 1921 में स्कूल छोड़ दिया और महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में शामिल हो गये। रामास्वामी कृष्णमूर्ति ने 1923 में उप संपादक के रूप में नवशक्ति में कथा/कहानियां लिखना शुरू किया। 1927 में उन्होंने अपनी पहली पुस्तक प्रकाशित की, तब वे थिरु वी. का. के संरक्षण में काम कर रहे थे। उन्होंने गांधी आश्रम में सी. राजगोपालाचारी के साथ काम करना शुरू किया। उन्होंने शराबबंदी का प्रचार करने वाली पत्रिका राजाजी के साथ विमोचनम प्रकाशित किया। वह स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े रहे। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण 1931 के दौरान उन्हें छः महीने की जेल हुई थी। बाद में वे आनंद विकटन में शामिल हो गए, संपादक एस. एस. वासन के साथ एक लोकप्रिय तमिल पत्रिका से जुड़ गये। वे एक आलोचक, मजाकिया लेखक, राजनीतिक टिप्पणीकार और लघु कथाकार के रूप में बहुत लोकप्रिय हुए। हालांकि बाद में उन्होंने आनंद विकटन भी छोड़ दिया और 1941 में स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गए। अपनी रिहाई पर उन्होंने और सदाशिवम ने कल्कि नाम से एक साप्ताहिक शुरू किया और आजन्म वे इस पत्रिका के संपादक बने रहे। उन्होनें इस उपन्यास के अतिरिक्त पार्थिबन कनवु, शिवगामियिन सपथम, सोलाईमलाई इलावरासी (1947) की भी रचना की है। उनके अन्य सामाजिक उपन्यासों में कल्वानिन कधली (1937), त्याग भूमि (1938-1939), मगुदापति (1942), अबलायिन कनेर (1947), अलाई ओसाई (1948), देवगियिन कानवन (1950), मोहिनी थीवु (1950), पोइमन कराडू (1951), पुन्नैवनाथु पुली (1952), अमारा थारा (1954) का नाम लिया जा सकता है। उनके द्वारा लघु कथाएं भी लिखी गई हैं। जिनमें सुभाथरायिन सगोधरन, ओट्राई रोजा, थेपीडिथा कुदिसाइगल, पुधु ओवरसियर, वसधाधु वेणु आदि का नाम लिया जा सकता है। कृष्णमूर्ति एक फिल्म और संगीत समीक्षक भी थे। उन्होंने कई गीतों के बोल भी लिखे, जिनमें से अधिकांश को कर्नाटक संगीत में ढाला गया। कल्कि के प्रति आम पाठकों का सम्मान इस तथ्य से भी समझा जा सकता है कि कृष्णमूर्ति के जन्म शताब्दी समारोह में एक डाक टिकट जारी किया गया।

पोन्नियिन सेलवन उपन्यास दसवीं शताब्दी में चोल साम्राज्य की साजिशों और सत्ता के संघर्षो के चित्रण के लिए जाना जाता है। इस उपन्यास में कई दिलचस्प पात्र हैं। इन महत्वपूर्ण पात्रों में नन्दिनी, वंदियाथेवन, अरूण मोझी वर्मन, आदित्य करीगालन, परान्तक, पार्थी पल्ववन आदि शामिल किये जा सकते हैं। कहानी सम्राट चोल की बीमारी के साथ शुरू होती है जब उनके दोनों बेटे उनके साथ नहीं होते। बड़ा बेटा आदित्य करिकालन उत्तरी कमान के जनरल हैं और कांची में रहते हैं। छोटा बेटा अरुलमोझिवर्मन एक सैन्य अभियान पर श्रीलंका में है। उनकी बहन कुंदवई पझयाराय में चोल शाही घराने में रहती हैं। कहानी तब

आगे बढ़ती है जब अफवाहें फैलती हैं कि सुंदर चोल और उनके बेटों के खिलाफ साजिश रची जा रही है। कुदवई वंदियाथेवन को यह संदेश अरूलमोझी वर्मन तक पहुँचाने और उन्हें वापस लाने के लिए भूमि पार श्रीलंका भेजती है। वल्लवनारायण वंदियाथेवन अपने दोस्त कंधनमारन के कदंबूर महल में एक गुप्त बैठक पर छिपकर इन संदेहों की पुष्टि करते हैं। अपनी युवावस्था में आदित्य करिकालन को नंदिनी से प्यार हो गया था, लेकिन परिस्थितियां कुछ ऐसे बदलती हैं कि वो आदित्य करिकालन द्वारा वीरपांडियन को मारने के बाद चोल वंश को नष्ट करने की कसम खाती है। इनके अलावा मदुरंथाका थेवर (वह व्यक्ति जिसे साजिशकर्ता राजा बनाना चाहते हैं), गंदारादित्य का पुत्र, और अनिरुद्ध ब्रह्मरायर, सुंदर चोलर के प्रधान मंत्री और हर जगह आंख और कान वाले व्यक्ति जैसे अन्य पात्र हैं। वंदियाथेवन की मुलाकात ब्रह्मरायर के जासूस अझवारकादियान नंबी से भी होती है, जो देश में घूमता है और प्रधानमंत्री के लिए जानकारी एकत्र करता है। वंदियाथेवन श्रीलंका पहुंचता है, अरुलमोझीवर्मन से मिलता है, और उसका मित्र बन जाता है। श्रीलंका में अरुलमोझीवर्मन को पता चलता है कि उनके पिता ने पास के एक द्वीप पर कुछ समय बिताया था और एक लड़की के साथ रहे थे जो बहरी और मूक पैदा हुई थी। वह उससे मिलता है यह वही महिला होती है जो अरूलमोझी वर्मन को कई बार कठिनाइयों से बचा चुकी होती है। श्रीलंका से वापस आते समय अरुलमोझिवर्मन पर हमला होता है, वह एक चक्रवात में फंस जाता है और लापता हो जाता है। अफवाह फैलती है कि वह मर चुका है, लेकिन वह बच जाता है और चूड़ामणि विहारम में स्वस्थ हो जाता है। धीरे-धीरे बिखरा हुआ परिवार इकट्ठा होना शुरू हो जाता है। इस बीच साजिशकर्ता एक दिन चुनते हैं जिसमें सम्राट और उनके दोनों पुत्रों की हत्या कर दी जाएगी। इस बीच नंदिनी राज्य के भविष्य के बारे में चर्चा करने के लिए आदित्य करिकालन को कदंबूर महल में बुलाती है। हालांकि करिकालन जानता है कि उसका जीवन पूरी तरह से खतरे में है लेकिन वह नंदिनी से मिलने के लिए कदंबूर की यात्रा करता है। आदित्य करिकालन की महल में हत्या कर दी जाती है। इस बीच अरुलमोझीवर्मन ठीक हो जाता है और तंजावुर लौट जाता है, जहां उसे शुरू में ताज स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया था। वह परिचित प्रतीत होता है, लेकिन बाद में राज्याभिषेक समारोह के दौरान सभी को बरगलाता है और इसके बजाय अपने चाचा उथमा चोल को ताज पहनाता है। इस प्रकार पुस्तक के पांचवें भाग को बलिदान के शिखर, थियागा सिगारम के रूप में नामित किया गया है।

इस रोचक उपन्यास पर फिल्म बनाने के लिए काफी पहले से प्रयास किये गये। एमजी रामचंद्रन ने इस दिशा में पहला प्रयास 1958 में किया। उन्होनें दस हजार रूपये में इस उपन्यास के फिल्म अधिकार खरीदे और घोषणा की कि वह इस उपन्यास पर फिल्म बनायेंगे। एमजीआर की यह इच्छा थी कि वे स्वयं इस फिल्म में निर्माण, निर्देशन और अभिनय करेंगे और उनके साथ जेमिनी गणेशन, वैजयंतीमाला बाली, पद्मिनी, सावित्री सहित कई नामचीन कलाकार शामिल रहेंगे। एमजीआर ने फिल्म की पटकथा लिखने के लिए महेंद्रन को चुना, किन्तु शूटिंग शुरू होने से पहले ही एमजीआर एक दुर्घटना के शिकार हो गये और उनके घाव को ठीक होने में छः महीने लग गए। परिणाम यह हुआ कि यह फिल्म नहीं बन सकी। 1980

के दशक में अभिनेता कमल हसन और मणिरत्नम ने इस उपन्यास पर फिल्म बनाने का निर्णय किया लेकिन यह जोड़ी भी इस योजना को अंजाम तक ले जाने में असफल रही। 2000 के दशक में नागा द्वारा मक्कल टीवी और कलैगनार टीवी द्वारा पुस्तक को टेलीविजन श्रृंखला में बनाने का और प्रयास किया गया। 2008 में चेन्नई स्थित एक एनीमेशन स्टूडियो रेविंडा मूवी टून्स द्वारा 32 घंटे की एक एनीमेशन फिल्म की योजना बनाई गई और इसे पूरा करने में सात साल लगे। यह फिल्म अप्रैल 2015 तक रिलीज होने वाली थी, लेकिन अक्टूबर 2022 तक रिलीज नहीं हुई। 2010 के अंत में मणि रत्नम ने इस प्रोजेक्ट पर फिर से काम करना शुरू किया और स्क्रिप्ट को अंतिम रूप देने के लिए लेखक जयमोहन के साथ काम किया, किन्तु यह प्रोजेक्ट भी सफल नहीं हुआ। 2016 में, इरोस इंटरनेशनल ने एक रचनात्मक निर्माता के रूप में जयमोहन और सौंदर्या रजनीकांत को पुस्तक को एक वेब-श्रृंखला में बदलने के लिए शामिल किया, लेकिन यह योजना भी असफल ही सिद्ध हुई।

2019 की शुरुआत में, सौंदर्या रजनीकांत ने भी इस उपन्यास पर फिल्म बनाने की घोषणा की। 2019 में ही मणिरत्नम ने भी इस उपन्यास पर आधारित फिल्म पर काम करना शुरू किया। इस प्रोजेक्ट मे उन्होंने विक्रम, ऐश्वर्या राय बच्चन, जयम रवि, कार्थी और त्रिशा जैसे कलाकारों को शामिल करते हुये सितंबर, 2021 में दो भागों के लिए फिल्मांकन का काम पूर्ण किया। अन्ततः यह फिल्म 30 सितंबर, 2022 को पांच भारतीय भाषाओं में रिलीज हुई। इस क्रम में इस फिल्म का दूसरा भाग 28 अप्रैल, 2023 को रिलीज किया गया। इन फिल्मों को व्यवसायिक रूप से और आलोचकों द्वारा सराहना मिली।

इस महान कृति को फिल्मी पर्दे पर उतारने से पहले इसका मंचन भी किया गया है। अव्वई शनमुगम इरोड में तमिल नाटक पर एक सम्मेलन आयोजित करने वाले पहले व्यक्ति थे। 1961 में दिल्ली में मोतीलाल नेहरू शताब्दी समारोह में 'राजा राजा छोझन' भी प्रस्तुत किया गया। सिंगापुर में 'राजा राजा चोझान' भी 90 बार मंचित किया जा चुका है। ऐसा माना जाता है कि इस कृति का अब तक कुल मिलाकर इसका दो हजार बार से भी ज्यादा मंचन हो चुका है। 1999 में पुस्तक को ई. कुमारवेल द्वारा इस कृति का मंचीय नाटक में रूपांतरित किया गया। चेन्नई के वाईएमसीए नंदनम के अंदर बक के थिएटर में मैजिक लैंटर्न थिएटर द्वारा मंचित किया गया। स्क्रिप्ट की लंबाई मूल रूप से नौ घंटे से अधिक लंबी थी, लेकिन बाद में इसकी अवधि चार घंटे और बीस मिनट करते हुये 72 अभिनेताओं के समूह द्वारा मंचित किया गया। मैजिक लैंटर्न थिएटर ग्रुप ने जून 2014 में चेन्नई में इंटरनेशनल लाइव द्वारा बहुत भव्य पैमाने पर एक मंचीय नाटक में रूपांतरित किया गया। इसी क्रम में शिकागो तमिल संगम द्वारा भी मई 2013 में इस नाटक का मंचन अपने 40 से अधिक कलाकारों के साथ किया गया।

इस महान उपन्यास का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है। प्रीताराजा कन्नन द्वारा अंग्रेजी अनुवाद भी किया गया है, जो द टाइगर थ्रोन के नाम से प्रकाशित है। कई अन्य अंग्रेजी लेखकों ने भी इस उपन्यास का अनुवाद किया है। इस कृति का संस्कृत अनुवाद भी किया गया है।

इस फिल्म की सफलता ने यह सुनिश्चित किया है कि साहित्यिक कृतियों पर बनने वाली फिल्मों को यदि उसी गम्भीरता से बनाया जाये, तो निश्चित रूप से ऐसी फिल्में दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

सम्पर्क : 9412290079
ई-मेल : singhsdm@gmail.com
लेखक भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी हैं।